साबित हुआ मोदी एक मिस्टेक हैं!

महेंद्र मिश्र

बीजेपी भारत को विश्व गुरू बनाना चाहती है और मोदी को विश्व का सबसे बड़ा नेता। लेकिन भविष्य के उस चक्रवर्ती को न्यूजीलैंड के आतंकी हमले में मरे अपने 9 नागरिकों की मौत पर जरा भी अफसोस नहीं। दिन भर किसी के जन्मदिन समेत फालतू मुद्दों पर ट्वीट करने वाला शख्स अपने नागरिकों की मौत पर एक ट्वीट भी करना जरूरी नहीं समझता है। देश का मुखिया तो नागरिकों के अभिभावक की तरह होता है। सुख से ज्यादा उसके दुख में खड़े होने की उसकी जिम्मेदारी बनती है। मोदी को न्यूजीलैंड की प्रधानमंत्री जेसिंडा से सीख लेनी चाहिए। उन्होंने पीड़ितों के प्रति संवेदना का जो प्रदर्शन किया है वह बेमिसाल है। पीडितों के प्रवासी होने के बावजूद अपने किसी नागरिक से भी ज्यादा उन्होंने उनके प्रति अपनापा दिखाया है।

पीड़ितों के परिजनों के बीच उनकी वेष-भूषा में जाकर भरोसा दिलाने की जेसिंडा की कोशिश किसी का भी दिल जीत लेने के लिए काफी है। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री ने क्या किया? उन्होंने इस घटना में मरे अपने 9 नागरिकों के प्रति किसी संवेदना की बात दूर उसे वोट के मोहरे के तौर पर इस्तेमाल करने की कोशिश की। क्योंकि पीड़ितों के मुस्लिम जमात से होने के चलते उन्हें उसमें भी चुनाव के मौके पर एक ध्रुवीकरण की संभावना दिख गयी। वैसे भी पीएम मोदी पुराने सौदागर हैं। लाशें देखते ही वह वोटों की गुणा-गणित में जुट जाते हैं।

लेकिन देश का मुखिया अगर समाज को इस तरह से खंड-खंड करके देखना शुरू कर देगा तो अलग रंग, रूप, वेश-भूषा वाले हिंद के निवासियों की एकता का क्या होगा। क्या आप इसके जरिये देश को विभाजनकारी नजरिये से देखने और उसे हर संभव जातीय, क्षेत्रीय, भाषायी और नस्लीय तरीके से खंड-खंड में बांटने की जेहनियत को बल नहीं प्रदान कर रहे हैं? जिस राष्ट्रवाद का बीजेपी गाना गाती है। अपनी कार्यप्रणाली और सोच में वह उसके कितना खिलाफ है। यह उसका उदाहरण है। पीएम मोदी राष्ट्रवाद के इस खंडित रास्ते से देश को आखिर कहां ले जाना चाहते हैं।

और इन सबसे अलग जिस आतंकवाद की समस्या से भारत पीड़ित है। उस पर देश का यह रवैया क्या अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारने सरीखा नहीं है? इससे न केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई कमजोर होगी बल्कि उसके और फलने-फूलने का रास्ता भी साफ हो जाएगा। भारत की तो अमेरिका समेत पूरे यूरोप से यही शिकायत रही है कि उन्हें अपने हितों को नुकसान पहुंचाने वाले ही आतंकी दिखते हैं। और दूसरों के आतंकवाद को आतंकवाद नहीं मानता।

चीन के राष्ट्रपति से जब आप मसूद अजहर के खिलाफ समर्थन मांगने जाएंगे तो वह यह पूछ ही सकते हैं कि न्यूजीलैंड में घटी घटना पर आपका क्या रुख है। अगर आप और आपके समर्थकों के लिए वह गलत नहीं बल्कि जश्न मनाने का एक मौका है तो भला चीन को किसी मसूद अजहर से क्या परेशानी हो सकती है। अगर आपको लगता है कि न्यूजीलैंड की घटना एक सबक है और उसमें आप अपना राष्ट्रहित देखते हैं तो चीन भला पाकिस्तान से रिश्ते खराब कर अपने राष्ट्रहित के खिलाफ क्यों जाएगा।

मामला यहीं तक सीमित होता तो भी कोई बात नहीं थी। दरअसल अमेरिका, यूरोप समेत पश्चिमी देशों में होने वाले इस तरह के नस्लीय हमले बीजेपी-संघ के लिए आदर्श रहे हैं। यूरोप के फासीवादी उभार से संघ प्रेरणा लेता है। दरअसल वे भी अपने देश में ठीक वही काम कर रहे हैं जो यहां बीजेपी और संघ के लोग कर रहे हैं। बीजेपी और संघ भी आर्यों और हिंदुओं को श्रेष्ठ मानकर सांप्रदायिक आधार पर उसी बहुमत की सत्ता को स्थापित करना चाहते हैं जिसे यूरोप में गोरे नस्लवादी अपने लिए देखते हैं। लिहाजा ये दोनों ही समाज के दूसरे छोटे हिस्सों को भविष्य के खतरे के तौर पर पेश कर उनके खिलाफ घृणास्पद अभियान चलाने का काम करते हैं। ऐसे में अपने-अपने तरीके से यूरोप और भारत के इस हिस्से के बीच एक बिरादराना रिश्ता है।

लेकिन इस घटना के बाद एक बात फिर साफ हो गयी कि मोदी ने अटल की उस सीख को नहीं मानी। जब उन्होंने सत्ता में रहते उनसे राजधर्म के पालन की बात कही थी। उस घटना को हुए आज तकरीबन 17 साल बीत गए हैं लेकिन मोदी आज भी उसी गुजरात में और उसी सोच के साथ खड़े हैं। मेरे किसी रिश्तेदार ने किसी बात पर मुझसे पूछ लिया कि आप मोदी को पीएम नहीं मानते तो मैंने उनसे उल्टा सवाल कर दिया कि मोदी क्या खुद को देश का पीएम मानते हैं? सचाई यही है कि वह एक पार्टी के प्रधानमंत्री से ऊपर उठ ही नहीं सके। और भूमिका में भी एक पार्टी प्रधान से आगे नहीं बढ़ सके। एक बार फिर न्यूजीलैंड की घटना ने इसी बात को साबित कर दिया कि वह देश के राजा नहीं बल्कि मिस्टेक हैं।

मोदी के मंत्रियों की बदजुबानी हाईट पर, प्रियंका को कहा 'पप्पू' की जगह अब आ गयी 'पप्पी'

जनज्वार। मोदी के मंत्रियों का अपनी जुबान पर कोई काबू नहीं है, यह बात समय-समय पर सिद्ध होती रहती है। ताजा मामला जुड़ा है मोदी कैबिनेट के मंत्री महेश शर्मा से, जिन्होंने कांग्रेस महासचिव और पूर्वी उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रियंका गांधी पर ऐसी टिप्पणी की है, जिसके लिए वह सोशल मीडिया पर ट्रोल होने लगे हैं।

प्रियंका गांधी पर ओछी टिप्पणी और हमलावर होते हुए केंद्रीय मंत्री महेश शर्मा ने कहा कि कांग्रेस में पप्पू के बाद अब पप्पी आ गई है। गौरतलब है कि संस्कृति मंत्री महेश शर्मा मैं भी चौकीदार कैंपेन के सिपाही हैं और ऐसे सिपाही जिन्हें महिलाओं की इज्जत करनी भी नहीं आती।

गौरतलब है कि चुनावों की तारीखों का ऐलान होने के बाद जहां सोशल मीडिया पर भाजपा से जुड़े तमाम बड़े-बड़े नेताओं समेत गली-मोहल्ले के गुंडे तक ने मैं भी चौकीदार कैंपेन में शिरकत कर ली है, वहीं एक दूसरे पर हमलावर होने का दौर भी जारी है।

कांग्रेस और भाजपा के बीच 'चौकीदार चोर है' बनाम 'मैं भी चौकीदार' के नारों के जरिए सोशल मीडिया पर घमासान चल रहा है। इस टीका टिप्पणी और हमले को और आगे बढ़ाते हुए संस्कृति मंत्री महेश शर्मा का अपनी जुबान पर काबू नहीं रहा और उन्होंने प्रियंका गांधी को सरेआम पप्पू की पप्पी कह डाला।

सिकंदराबाद में आयोजित चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री महेश शर्मा ने कहा कि मायावती, अखिलेश यादव, पप्पू और अब तो पप्पू की पप्पी (प्रियंका गांधी) भी आ गई हैं।

उन्होंने आगे कहा 'वह पप्पू कहता है मैं प्रधानमंत्री बनूंगा। मायावती, अखिलेश यादव, पप्पू और अब पप्पू की पप्पी भी आ गई है, वह प्रियंका पहले हमारे देश की बेटी नहीं थी क्या? क्या कांग्रेस की बेटी, सोनिया परिवार की बेटी नहीं थी क्या, आगे नहीं रहेगी क्या? क्या नया लेकर आई है वह? पहले नेहरू, फिर राजीव गांधी, फिर संजय गांधी, फिर राहुल गांधी, फिर प्रियंका गांधीज्और कोई होगा तो वह भी गांधी।'

प्रियंका को 'पप्पी' कहने पर ही महेश शर्मा की जुबान नहीं रुकी। यहां वे पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर भी आक्रामक हुए। महेश शर्मा ने कहा, 'अगर ममता बनर्जी यहां आकर कथक नाच करने लगें तो उनकी कौन सुन रहा है, कुमार स्वामी कर्नाटक का सीएम यहां आकर गीत गाने लगे तो कौन सुन रहा उनकी। 72 सीट इनकी हैं, 200 कहां से लाएंगे। आज भी इन लोगों ने यहां की माटी के, किसान के लाल चौधरी चरण सिंह, जो वास्तव में किसानों के मसीहा थे, उनकी भी यही दुर्गति की थी। पहले तो सरकार बनवा दी, फिर पीछे से तख्ता खींच लिया।'

वहीं राहुल गांधी पर हमला करते हुए महेश शर्मा ने कहा, 'कांग्रेसी मजबूत सरकार नहीं चाहते, बल्कि कमजोर सरकार चाहते हैं, इसीलिए तो कहते हैं अपने पप्पू का साथ लेंगे। पप्पू तो पप्पू ही रह गया बेचारा। उस दिन हम भी थे पार्लियामेंट में, सामने मोदीजी बैठे थे। एक पंक्ति पीछे हम भी बैठे थे। क्या आंख मारी साहब मैं भी पीछे बैठा था, घायल हो गया मैं भी।'

महेश शर्मा की इस टिप्पणी को शर्मनाक बताते हुए पत्रकार अभिषेक कश्यप लिखते हैं, 'ये भाषा है भाजपा नेता और देश के संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा की। ऐसा अश्लील, अमर्यादित और कुसंस्कारी शख्स, जो किसी सभ्य नागरिक समाज का वाशिंदा तक नहीं हो सकता, दुर्भाग्य से देश का संस्कृति मंत्री है।'

वहीं प्रियम सिंह कहते हैं, 'मोदी के मंत्री ने प्रियंका गांधी को बताया पप्पू की 'पप्पी', क्या महिलाओं को गाली देकर चुनाव जीतेगी भाजपा?

आत्म-हनन के पथ पर मोदी !

अरुण माहेश्वरी

किसी भी सामाजिक-राजनीतिक परिघटना के पीछे कोई एक कारण नहीं होता है । यह जीवन के अनेक कारणों के समुच्चय का परिणाम होता है । इसे कहते है - कारणों का नानात्व ।

2014 में मोदी के उत्थान के पीछे एक कारण नहीं था । वे मनमोहन सिंह के अतिरिक्त मौन व्यक्तित्व की तुलना में अतिरिक्त वाचाल थे । यूपीए-2 के काल में आम लोगों के बीच भ्रष्टाचार को लेकर कई कारणों से एक अलग प्रकार की बेचैनी पैदा हो गई थी। अन्ना हज़ारे, अरविंद केजरीवाल की तब दिल्ली में धूम मची थी । लेकिन लाभ मिला मोदी को ।

इसके अतिरिक्त, गुजरात के जनसंहारों के बाद भी वहाँ सत्ता पर बने रहने के कारण लोगों को लगा कि यह आदमी कठिन समय में भी अर्थ-व्यवस्था की बागडोर थाम सकता है । गुजरात में पूँजीपतियों के सामूहिक प्रदर्शनों ने इसमें एक बड़ी भूमिका अदा की ।

इनके अलावा जादू की छड़ी से देश का कायाकल्प कर देने का मोदी का ताबड़तोड़ प्रचार भी एक नये स्तर का था । 2014 में मोदी ने शासक कांग्रेस दल से दुगुना से ज़्यादा रुपये बहाये थे ।

मोदी की भारी जीत के बाद कई उदारवादियों ने भी जनतांत्रिक नैतिकता के नाम पर इस उम्मीद में मोदी को मौक़ा देने की दलीलें शुरू कर दी थी कि सरकार चलाने की जिम्मेदारी इस ख़तरनाक प्राणी को सभ्यता सिखा देगी।

और देखते-देखते मोदी केंद्र के अलावा अन्य राज्यों में भी छा गये । वे भारतीय जनतंत्र की राजनीति की एक ख़ास परिघटना बन गये ।

लेकिन सच कहा जाए तो यह कहानी बमुश्किल दो साल चली, और इसी बीच यह साफ़ देने लगा था कि हर चीज़ की अपनी ख़ास तात्विकता होती है । बबूल का बीज बदले हुए मौसम में, कितने ही आनुवंशिक बदलावों से क्यों न गुज़रे, शुद्ध रसीले मीठे आमों का पेड़ पैदा नहीं कर सकता है ।

मोदी के आने के साथ ही बुद्धिजीवियों की हत्या, उन्हें डराने-धमकाने और प्रेस को पूरी तरह से पालतू कुत्ते में तब्दील करने का डरावना संगठित सिलसिला तो शुरू हो ही गया था । बीफ़ और गोरक्षा के नाम पर मुसलमानों को डराने का और लव जिहाद के नाम पर मुसलमानों से संपर्क रखने वाले तमाम लोगों को धमकाने का काम भी पुरज़ोर चलने लगा ।

और तभी, जनता पर मोदी के मूलभूत संघी फ़ासिस्ट विचारों का, गुजरात के जनसंहार वाले हत्यारे अभियान का प्रभाव सबसे प्रकट रूप में पहली बार 8 नवंबर 2016 के दिन सामने आया जब मोदी ने तालियाँ बजाते हुए नोटबंदी की घोषणा करके देश भर में पूरी जनता को बदहवास होकर बैंकों के सामने लाइनों में खड़ा होने, असहाय दशा में रोने-कलपने के लिये उतार दिया । पूरे दो महीने तक मोदी टेलीविज़न के पर्दे पर रोते-बिलखते लोगों, स्त्रियों, वृद्धजनों, किसानों, मज़दूरों के दुखों पर पूरी अश्लीलता के साथ नाचते रहे ।

वह एक अजीब सा समय था । हर रोता हुआ आदमी अन्यों के रूदन को देख कर ख़ुद को दिलासा दे रहा था । वह अंदर ही अंदर शायद इस कल्पना से ख़ुश भी था कि उसकी तरह ही सारे काला धन वाले भी अपने भाग्य पर रो रहे होंगे ! विपत्ति के काल के एक समताकारी प्रभाव की ख़ुशफ़हमी में लोग उस महा ठगी के झटके को झेल गये ।

और कहना न होगा, उसी जन-उद्वेलन की परिस्थिति में मोदी ने उत्तर प्रदेश में भी भारी जीत हासिल कर ली ।

मोदी को ख़ुद को ईश्वर मान लेने के लिये इतना सब काफ़ी था। मार्च 2017 में यूपी के चुनाव हुए । मोदी की अर्थनीति की अपनी कोई विशेष समझ नहीं थी, लेकिन उसे इस क्षेत्र में अपनी ईश्वरीय शक्ति का परिचय देना था ! उसने अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह की अर्थनीति की किताब से एक पन्ना फाड़ लिया, जीएसटी का पन्ना और उसे अपनी अर्थनीति की एक महान पताका की तरह लहराते हुए जुलाई 2017 की आधी रात में संसद के संयुक्त सत्र में एक नक़ल किया हुआ पन्ना बिना उसे समझे, ग़लत-सलत ढंग से पढ़ दिया । मोदी-जेटली के हाथ में यूपीए का जीएसटी का अध्याय एक पूरी तरह से बेढंगे दस्तावेज का रूप ले कर सामने आया । कहा जा सकता है, जीएसटी की स्कीम का विकृतिकरण ही उसमें मोदी का मौलिक अवदान था !

लोग अभी तक नोटबंदी के दुखों से उबरे ही नहीं थे कि मोदी के इस नये कारनामे ने उनके ज़ख़्मों पर बुरी तरह से नमक रगड़ने का काम किया । कल-कारख़ाने, ख़ास तौर पर अर्थ-व्यवस्था का अनौपचारिक क्षेत्र पूरी तरह से तबाह हो गया । एक झटके में बेरोज़गारी की गति राकेट की गति से बढ़ने लगी । मोदी सत्ता के मद में इतने पागल हो गये कि भूखों मर रहे किसानों को सरे आम धमकाने लगे । फ़सल का वाजिब दाम माँगने पर मंदसौर में उन पर गोलियाँ बरसाई ।

इसके साथ ही ख़ुद मोदी अपने पूँजीपति मित्रों के साथ विदेश यात्राओं की पुरानी अय्याशी में डूब गये । नोटबंदी के ठीक पहले (सितंबर 2016 में) वे भारत की प्रमुख लड़ाकू विमानों की सरकारी उत्पादक कंपनी 'हिंदुस्तान एरोनेटिक्स लिमिटेड' (एचएएल) को धता बता कर रफाल लड़ाकू विमानों के दुनिया के सबसे बड़े रक्षा सौदे में अपने दिवालिया हो रहे मित्र अनिल अंबानी को तीस हज़ार करोड़ का लाभ पहुँचा चुके थे ।

हथियारों के सौदागरों की सोहबत में मोदी इतने बेलगाम हो गये कि वे खुले आम नीरव मोदी, मेहुल चौकसी की तरह के अपने मित्रों को बैंकों का हज़ारों करोड़ लूट कर विदेशों में जा बसने का प्रबंध करने लगे ।

इधर, देशवासियों की आँखों में स्वच्छता अभियान, शौचालय आदि के कोरे प्रचार से धूल झोंकते हुए मोदी ने समझ लिया कि अब भारत की दुखी जनता उनके चंगुल से कभी मुक्त नहीं होगी ! झूठे प्रचार से जनता को जीवन के दुख-दर्द को भुला देने का अचूक सम्मोहन मंत्र उनके हाथ लग गया है !

लेकिन, उनका और सारी दुनिया के ऐसे तानाशाहों का दुर्भाग्य है कि जीवन का सच पूरी तरह से उनकी ही इच्छा से गठित नहीं होता है । मोदी के मामले में भी ऐसा ही हुआ ।

नोटबंदी और जीएसटी के दुखों को तो हरेक आदमी महसूस कर ही रहा था, इसी बीच एक-एक कर मोदी और उनके लोगों के तमाम भ्रष्टाचार के क़िस्से भी खुल कर सामने आने लगे । ख़ास तौर पर रफाल के मामले में तो ऐसे तमाम प्रमाण और दस्तावेज सामने आए कि दिन रात बक बक करने वाले मोदी को ही साँप सूंघ गया।

राहुल गांधी ने संसद के पटल पर ही उनकी सर्वशक्तिमानता की छवि के परखचे उड़ाते हुए यहाँ तक कहा कि इस शख़्स में हम से आँख मिलाने तक की हिम्मत नहीं है । यह कभी इधर देखता है, कभी उधर। कभी ऊपर तो कभी नीचे । लेकिन आँख से आँख नहीं मिला पाता है ।

और कहना न होगा, यहीं से पैदा हुआ, आज के भारत के घर-घर में गूँजता हुआ नारा - चौकीदार चोर है । राहुल ने संसद में ही यह भी कहा कि यहां उपस्थित मोदी और शाह, दो ऐसे व्यक्ति है जो अन्य सबसे अलग है और ये दोनों यह जानते हैं कि उनके लिये चुनाव में हारना कितना भारी पड़ सकता है । एक बार सत्ता से हटने के बाद न जाने कितनी फौजदारी कार्रवाइयों का उन्हें सामना करना पड़ेगा !

इसके साथ ही मोदी-शाह के बेजा हस्तक्षेप के कारण सुप्रीम कोर्ट, आरबीआई, सीबीआई आदि संस्थाओं में अजीबोगरीब संकट के विस्फोट होने लगे । देश का पूरा प्रशासन सभी स्तरों पर पूरी तरह से ठप हो गया । सारी एजेंसियों के पास मानो मोदी के बचाव के अलावा दूसरा कोई काम नहीं रह गया ।

मोदी सरकार के बदइरादों, उसकी कूटनीतिक नालायकी और झूठे जंगी तेवर ने कश्मीर समस्या को भी एक नये विस्फोटक कगार पर पहुँचा दिया । कश्मीर में उनकी साझा सरकार ऐसे चली गई जैसे उसके रहने का कभी कोई औचित्य ही नहीं था ।

मोदी के स्वेच्छाचार, सत्ता का केंद्रीकरण, भ्रष्टाचार, आर्थिक नीति के मामले में चरम अज्ञता, तमाम महत्वपूर्ण विषयों पर उसकी नीति-विहीनता और झूठी जंगबाज़ी की नीतियों ने वस्तुत: आज पूरे देश को अचल बना कर छोड़ दिया है । जैसे मोदी के उत्थान के पीछे एक समय में अनेक प्रकार के कारणों का एक समुच्चय पैदा हो गया था, देखते ही देखते अब उनके तेज़ी से चरम पतन की परिघटना के नाना कारणों का समुच्चय तैयार हो चुका है ।

आज मोदी के प्रति स्वीकार्यता का किसी भी विवेकवान आदमी के पास कोई कारण नहीं बचा है । ख़ुद मोदी भी अपने शासन से जुड़े किसी विषय को 2019 के चुनाव का विषय बनने नहीं देना चाहते हैं । इसीलिये वे भारत नहीं, पाकिस्तान के विषय पर चुनाव लड़ना चाहते हैं ; सर्जिकल स्ट्राइक के झूठे शौर्य की किस्सागोई से काम चलाना चाहते हैं ।

बालाकोट प्रकरण में भारत को अपमानित कराने के बाद भी गोदी मीडिया की मदद से मोदी ने थोड़े से दिनों तक 'राष्ट्रवाद' का उन्माद पैदा करने की कोशिश की थी । लेकिन इस उन्माद का ज्वर जितनी तेज़ी से चढ़ा, उतनी ही तेज़ी से उतर भी गया । इस प्रकार, आज 'युद्धबाजी' के अपने तरकश के अंतिम तीर को भी चला कर मोदी खुद को पूरी तरह से निहत्था कर चुके हैं ।

सरला माहेश्वरी की एक कविता है 'अंतिम तीर' :

क्या तरकश का अंतिम तीर /ब्रह्मास्त्र है कि /शत्रु मरेगा ही !

अंतिम तीर अंतिम होता है /बस खुद को निहत्था करता है ।

एक हल्की सी आवाज से / जब सपना टूटता है / पसरा पड़ा आदमी / गिद्धों से बचने / पसीना-पसीना / हो रहा होता है ।

अंतिम तीर / अंतिम क्षण का संकेत होता है ।

अब अवसादग्रस्त मोदी को लगता है जैसे आत्म-हत्या का रुझान बढ़ने लगा है । death drive। देश की गली-गली में गूँज रहे 'चौकीदार चोर है' के नारे से पागल हो चुके मोदी अब सड़कों पर उलंग होकर यह कहते हुए घूमने लगे है - मैं ही हूँ चौकीदार!

अपना अन्तिम तीर छोड़ कर निहत्था हो चुके मोदी ने 'चोर चौकीदार' पर जनता के न्याय की नियति को मान लिया है ! यह है मोदी के अंत की परिघटना का वह यथार्थ जो आने वाले सत्तर दिनों के बाद की परिस्थितियों को अंतिम आकार देगा ।